।। ओ३म्।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

होली के शुभ अवसर पर
आर्य सन्देश परिवार की ओर से
हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 36, अंक 19 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 18 मार्च, 2013 से 24 मार्च, 2013
विक्रमी सम्वत् 2069 दयानन्दाब्द : 189
सृष्टि सम्वत् 1960853113 वार्षिक : 250 रुपये
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
Website:www.thearyasamaj.org पृष्ठ 1 से 8 तक

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में
ऋषि बोधोत्सव भव्यता के साथ सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का बोध कोई साधारण नहीं था वह तो युगान्तरकारी था – *स्वामी सुमेधानन्द*

समाज कल्याण के लिये बने मूलशंकर से दयानन्द – *ब्र.राजसिंह आर्य*

विश्व में फैले अंधविश्वास, पाखण्ड़ और बुराइयों को समाप्त करने का कार्य आर्य समाज के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं कर सकता– *भारतभूषण गुप्ता*

कार्यक्रम में उपस्थित आर्यजन

मंच पर उपस्थित अतिथिजन

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बोधोत्सव एवं शिवरात्रि के शुभ अवसर पर विशाल ऋषि मेला दिल्ली के रामलीला मैदान में रविवार, 10 मार्च 2013 को प्रातः 9 बजे ध्वजारोहण से आरम्भ हुआ। पश्चात आचार्य डॉ. सत्यकाम वेदालंकार जी के ब्रह्मत्व में तथा वेदपाठी आचार्य ऋषिदेव जी एवं उनके साथी द्वारा विश्व में फैली अन्धविश्वास एवं पाखण्ड को दूर करने

शेष पृष्ठ 3 पर.....

महाशय धर्मपाल जी के
90 वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में अमृत महोत्सव

सीधा प्रसारण आस्था चैनल पर

26 मार्च, 2013 (मंगलवार)

स्थान:– तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम नई दिल्ली

सीधा प्रसारण के लिये लॉग ऑन करें
www.thearyasamaj.org

यज्ञ : प्रातः 9.00 बजे • सांस्कृतिक कार्यक्रम 10.00 से 1.00 बजे तक

वेद-स्वाध्याय

हम देवों के मार्ग पर चलें

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

आ देवानामपि पन्थामगन्म यच्छक्नवाम तदनु प्रवोळ्हुम। आग्निर्विद्वान्त्स यजात्सेदु होता सो अध्वरान्त्स ऋतूकन्कल्पयाति।। ऋ0 10। 2। 3।।

अर्थ– हम (देवानाम्) विद्वान् लोगों के (पन्थाम्) मार्ग पर (अगन्म) चलें (अपि) और (यत् शक्नवाम) जो कार्य हम कर सकें (तत्) उसे (अनु) क्रम से (प्ररोढुम्) समाप्त करने का प्रयत्न करें। (विद्वान्) विद्वान् पुरुष (अग्निः) अग्नि के समान है। (स यजात्) वह यज्ञ करने की विधि जानता है (स होता) वही होता कार्य का ज्ञाता है (स अध्वरान्) वही इन यज्ञों को (ऋतून् कल्पयाति) ऋतु के अनुसार करके उन्हें फलप्रद बनाता हैं।

पथ कौन सा सही है इस विषय में यह कहा जा सकता है कि जो छोटा हो और बाधाओं वाला न हो, वहीं सुपथ होता है अथवा **महाजनों येन गतः स पन्थाः** जिस मार्ग से बहुत से लोग आते–जाते हैं अथवा जिस पर व्यापारी वर्ग की गाड़ियाँ चलती हैं, वही सरल और सुरक्षित मार्ग है। बहुत लोगों के आने–जाने वाले मार्ग में चोर–उचक्कों अथवा हिंसक प्राणियों का भय नहीं रहता और जिस मार्ग से व्यापार होता है, वह सुरक्षित एवं बाधाओं से रहित होता है।

हमें मनुष्य जन्म किसी गन्तव्य स्थल तक पहुँचने के लिये ही मिला है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ही वे मंजिलें हैं जिन पर हमें क्रमशः पहुँचना है। बीहड़ वन, अनजान स्थान और ऊँचे, नीचे स्थानों पर नया मार्ग बनाना आसान काम नहीं है। अतः चलने से पहले किसी समझदार व्यक्ति से पूछ लेना चाहिये कि अमुक मार्ग से जाना कितना सुरक्षित रहेगा अथवा आने वाली बाधाओं की जानकारी पहले से ही हो जाने से उन्हें पार करना अपेक्षाकृत दृष्टि से सरल हो जायेगा।

यदि किसी मार्ग के जानने वाले के साथ यात्रा की जाये तो हम निश्चिन्त हो आगे बढ़ने का प्रयत्न करते हैं। मन्त्र कहता है– **आ देवानामपि पन्थामगन्म यच्छक्नवाम तदनु प्ररोढुम्।** हम देवों के मार्ग का अनुसरण करें जिससे हमारा लक्ष्य क्रमशः हमें प्राप्त होता चला जाये।

जड़ और चेतन दोनों प्रकार के देवों में कुछ विशेषतायें होती हैं। सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, ग्रह, अग्नि, जल, वायु आदि देवों की विशेषता यही है कि वे नियमबद्ध होकर अपने कार्यों को कर रहे हैं। सूर्य समय पर उदय–अस्त होता है। चन्द्रमा रात्रि के अन्धकार को कुछ कम करने के लिये और औषधियों में अमृत भरने के लिए उदित होता है। समय पर ऋतुयें आती हैं जिनके कारण विविध प्रकार के अन्न, फल, शाक, सब्जी और दूसरे खाद्य पदार्थ उपलब्ध होते हैं। इसी भाँति और भी बहुत सारे कार्य इनके द्वारा सम्पन्न होने से ही विविधता दिखाई देती है।

चेतन देवों में माता–पिता, गुरुजन और विद्वानों द्वारा बतलाये मार्ग या उनका अनुगमन करने से मार्ग सुगम हो जाता है। मन्त्र कहता है **अग्निर्विद्वान् सयजात्** जिसका मस्तिष्क ज्ञान से प्रकाशित है, जो अच्छे कार्यों में सर्वाग्रणी रहता है, भौतिक अग्नि के समान दी गई आहुतियों को सब देवों तक पहुँचा देता है और अपने सम्पर्क में आये प्रत्येक पदार्थ को अग्निमय बना देता है, उसी के बताये पथ या उसके साथ चलना हमें अपने लक्ष्य तक पहुँचा देगा। जैसे यह सूर्य अपनी किरणों द्वारा मानो यज्ञ कर रहा है और होता सभी पदार्थों का रस आकर्षित कर उसे दृष्टि द्वारा पुनः सभी ओर वितरित कर देता है। किस ऋतु में क्या कार्य होना है, विधाता ने उसे इस योग्य बनाया है कि उस ऋतु में तदनुसार ही उष्णता प्रदान करे। उसके इस कार्य में कहीं पर शिथिलता दिखाई नहीं देती। ऐसे ही जो आग्नेय पुरुष हैं उनके दिखलाये हुये मार्ग पर या उनके साथ चलने से हमारी जीवन यात्रा निर्बाधित हो जायेगी और अभीष्ट स्थान पर भी पहुँच जायेंगे।

देवों के साथ किसलिये चलना चाहिये यह अगला मन्त्र बतला रहा है।

यद्वो वयं प्रमिनाम व्रतानि विदुषां देवा अविदुष्टरासः।

अग्निष्टद्विश्वमा पृणाति विद्वान्येभिर्देवाँ ऋतुभिः कल्पयाति।। ऋ0 10.2.4।।

हे देवो ! आप के व्रतों को यदि हम अज्ञानी होकर भंग करें तो जिन नियमों का पालन कर आप इस उच्च पद पर पहुँचे हो, उन्हीं व्रतों का हमें उपदेश देकर हमारी न्यूनता या दोषों का निवारण कीजिये। देव स्वभावतः ही दयालु होते हैं जो हमारी दुर्बलताओं को देख क्रोधित नहीं होते अपितु सहानुभूति से उन दोषों का निवारण करने का उपाय बतलाते हैं।

यत्पाकत्रा मनसा दीनदक्षा न यज्ञस्य मन्वतो मर्त्यासः।

अग्निष्टद्धोता क्रतुविद्विजानन्य जिष्ठो देवाँ ऋतुशो यजाति।। ऋ0 10.2.5।।

हीनबल और अपरिपक्व ज्ञान वाला मनुष्य यज्ञस्य अर्थात् कौन से कर्म करने योग्य हैं, कौन से नहीं, क्या उचित और क्या अनुचित है, इस विषय में जब कुछ नहीं जानता तब यज्ञ कर्मों का ज्ञाता विद्वान् समयानुसार उसे क्या करना और क्या नहीं करना, इसका मार्ग दर्शन करे।

हे विद्वन्! तेरा यह सौभाग्य है कि तेरे माता–पिता ने अच्छे संस्कार दिये और तुझे योग्य बनाया है। जिन गुरुजनों ने तुझे ज्ञान चक्षु प्रदान किये हैं जिनके द्वारा समाज में प्रतिष्ठत हुए हो। अब यह आपका कर्त्तव्य है कि दुर्बल और मन्दबुद्धि अथवा मानवोचित भूल या आलस्य–प्रमाद वश जो सुपथ को छोड़ बैठे हैं अथवा कुमार्गगामी हो गये हैं, उन्हें सतपथ पर लाने के लिये प्रयत्न कीजिये। इसके तुम्हें दो लाभ होंगे। पहला लाभ यह होगा कि तुम्हारी विद्या सफल हो जायेगी और जब किसी व्यक्ति को गलत मार्ग छोड़ सन्मार्ग पर चलते देखोगे तो तुम्हारी आत्मा आनन्दित हो उठेगी।

होली मंगल मिलन समारोह
के शुभ अवसर पर विशेष छूट
अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
150 रुपये सी डी 5 सी डी का सेट
मात्र 50 रुपये

(डाक व्यय अलग देय होगा)
25, 26, 27, 28+कवि सम्मेलन आर्य वीर दल व्यायाम प्रदर्शन एवं लेजर शो पैसा भेजने पर ही सीडी भेजी जा सकेगी अथवा कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।
–: सम्पर्क करें :–
विजय आर्य, (9540040339)
वैदिक प्रकाशन विभाग, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
15–हनुमान रोड, नई दिल्ली फोन: 011–23360150,23365959

महर्षि देव दयानन्द का कृतित्व और व्यक्तित्व : जर्मन साहित्यकार कवयित्री ए. क्रिसेटाइन एलबर्स की दृष्टि में

महर्षि देव दयानन्द के कृतित्व और व्यक्तित्व पर भारत में अनेक चिन्तकों, समाजसेवियों, साहित्यकारों और दार्शनिकों ने लेखनी चलाई है। लेकिन विदेशी विद्वानों और दार्शनिकों ने क्या लिखा और कहा है, बहुत कम लोगों को ज्ञात है। जर्मन साहित्यकार कवयित्री ए. क्रिसेटाइन एलबर्स ने महर्षि के कृतित्व और व्यक्तित्व को भावपूर्ण कविता में ढाला है। ज्ञातव्य है, महर्षि से सन्दर्भित ऐसी कविताएँ अभी तक भारत में नहीं लिखी गई, इससे इन कविताओं का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। इसका काव्यानुवाद वेद–विचारक और नवयोग के प्रतिस्थापक डॉ. ज्ञानचन्द्रजी ने इसका काव्य भावानुवाद साहित्यपूर्ण भाषा में किया है। यह श्रद्धात्मक काव्य अत्यन्त श्रद्धा के साथ धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। आर्य महानुभाव इसे बहुत ही श्रद्धा और भक्तिभाव से परिपूर्ण होकर ही पढ़ें। प्रस्तुत धारावाहिक का चौदवहा भाग का हिन्दी काव्यानुवाद प्रकाशित किया जा रहा है। महर्षि के **जीवन दर्शन** से सम्बन्धित धारावाहिक के इस भाग को भी पूर्व की भाँति आप सभी भक्तिभाव एवं श्रद्धा के साथ पढ़ेंगे ऐसी आशा है– ***सम्पादक***

स्वामी दयानन्द सरस्वती
मौन वैभव के भव्यायाम, मुक्ति एवं निर्वाण

है एक मौन वैभव–गरिमा को लोकधाम;
आकृति भी वह नहीं, न शून्यता ही वह है
वह ध्वनि भी नहीं, न उसे मौन भी कह सकते,
उस महद् क्षेत्र में देश–काल के उभय तत्त्व
गल जाते अरु अपनी सत्ता खो देते हैं,
अरु क्षण–सत्ता में निज को न्यून बना देते
सब माप–तोल, आयतन नष्ट हो जाते हैं
तिस भी इसी लोक में स्थित होते हैं,

जो भी अस्तित्त्व सकल, जो भी उदार,
जो भी पवित्र है, अक्षत, सुंदरतामय है,
वह आकृति है, ध्वनि है या एक मुक्त परिमल,
जो कुछ भी है वह धवल– श्वेत सारांश मात्र।

यह शुद्ध क्षेत्र अरु अन्तहीन सा महावृत्त,
यह श्वेत–धवलता का व्यापकतम परिमण्डल
बस "अस्ति", अधिक इससे न शब्द कह पाते हैं।
अस्तित्त्व सकल को संतत घेरे रहता है।
इसकी मौलिकता को जब भी अभिव्यक्ति मिले
तब आकृति बनता, या ध्वनि–नाद, या कि परिमल,
बन परिज्ञेय होता पदार्थ में अभिव्यंजित
तब पृथ्वी और जगत की रचना करता है,
वह निखिल सुचंचल, ऊर्ध्व तरंगित रत्नाकर
जिसमें कोई भी पथिक विमुक्ति नहीं पाता।
उद्वेलित लहरों पर यात्रा करता रहता
वह सदा शक्ति से रहित तथा चंचल अस्थिर।

होली का पावन पर्व कैसे मनाएं?

होली का पावन पर्व फाल्गुन मास के अन्त में पूर्णिमा के दिन समूचे भारत वर्ष में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इसके दूसरे दिन हम फाग दुलहंडी के रूप में मनाते हैं और सरकारी तौर पर इस दिन छूटी होती हैं। इस पावन पर्व के सही तरीके को न समझने, शाब्दिक एवं रहस्यमय रूप व अर्थ को न समझने के कारण प्रश्न उठता है कि होली का पावन पर्व कैसे मनाएं?

यह पर्व बड़ा ही महत्वपूर्ण एवं पारस्परिक सामंजस्य का द्योतक है। जो लोग इस पर्व की पावन बेला पर रंग कीचड़ गोबर आदि डालते हैं यह पारिपाठी अच्छी नहीं है। हां. गुलाल आदि के द्वारा तिलक लगाकर परस्पर एक दूसरे का सम्मान करना तो ठीक है किन्तु प्रायः यह देखा जाता है कि इस दिन लोग रंग व कीचड़ डालने के कारण परस्पर झगड़ा भी करते है।

होली का शब्दिक अर्थ होता है होली सो होली अर्थात् परस्पर किसी के साथ वर्ष में कोई किसी प्रकार की ऊंच–नीच या लड़ाई–झगड़े की बात हो भी जाए तो उसे भूलकर परस्पर सौहार्द एवं भाईचारे की भावना कायम करें। होलिका दहन का अर्थ यह है कि अपने जीवन की समस्त बुराईयों एवं राक्षसी प्रवृत्ति को जलाकर भस्मसात कर देना। हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रेरणास्त्रोत ऋषि–मुनियों महापुरुषों ने प्राचीनकाल में प्रत्येक पर्वो का अर्थ एवं महत्व दर्शाते हुय साधारण मनुष्यों का मार्गदर्शन किया है। उन्होंने इस पर्व का वर्ष का अन्तिम पर्व सुनिश्चित करते हुए मनुष्यों को अपने जीवन की कमियों एवं बुराईयों को दूर करके सन्मार्ग पर अग्रसर होने का सदूप्रदेश दिया था। जिसे आज भूलकर गलत तरीके से अपनाय जा रहा है। अतः सभी को होली के पावन पर्व पर धार्मिक एवं सामाजिक सेवा की भावना को उजागर करने वाले सुन्दर श्रेष्ठ कृत्य करने चाहिए तथा पारस्परिक मतभेदों को भुलाकर सद्भाव स्थापित करना चाहिए। यही इस पर्व के मानाने का मुख्य उद्श्ैय एवं वास्तविक तरीका है न कि एक दूसरे पर कीचड गोबर इत्यादि का एक दूसरे पर डलकर गन्दगी फैलाना।

पृष्ठ 1 का शेष

ऋषि बोधोत्सव भव्यता के साथ.....

के संकल्प के साथ यज्ञ भी सम्पन्न हुआ। इस यज्ञ के यजमान थे श्रीमती कान्ता वर्मा एवं श्री अशोक वर्मा, श्रीमती रजनी एवं श्री शशि भूषण वर्मा, श्रीमती स्वदेश एवं श्री यशोवीर आर्य, श्रीमती तरुणा एवं श्री अमित कुमार अरोड़ा आदि आर्यजनों इस महायज्ञ में आहुति दी।

इस शुभ अवसर पर विद्यालयों के छात्राओं ने उत्साह पूर्वक शिवरात्रि पर लघुनाटिका, खेल प्रतियोगिताएं,भाषण प्रतियोगिताएं, विद्वत गोष्ठी एवं मधुर संगीत में हिस्सा लिया। आर्य वीराँगना दल जनकपुरी दिल्ली द्वारा मनमोहक प्रस्तुतियाँ भी दी गई। तदोपरान्त सार्वजनिक सभा का भी आयोजन हुआ।

आर्य युवा सन्यासी स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने विदेशों में वैदिक सन्देश पहुँचाकर भारतीय संस्कृति को गौरवान्वित करने पर बल दिया। उन्होने कहा, महर्षि का बोध कोई साधारण नहीं था। वह तो युगान्तरकारी था। हम सभी को उनके बोध से प्रेरणा लेकर आगे बढने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम में अपना उद्बोधन देते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मु के प्रधान श्री भारतभूषण गुप्ता जी ने कहा कि आज विश्व में फैली अंधविश्वास, पाखण्ड,बुराईयाँ प्रचलित हैं, इन्हें समाप्त करना एक बहुत बड़ी चुनौती है। यह कार्य आर्यसमाज के अतिरिक्त अन्य दूसरा कोई नहीं कर सकता।

इस अवसर पर वैदिक विद्वान डॉ देवशर्मा, आचार्य प्रणवदेव शास्त्री, एवं डॉ.बलबीर आचार्य जी ने भी आर्यजनों को सम्बोधित किया।

दिल्ली सभा के युवा भजनोपदेशक श्री कुलदीप भास्कर एवं संगीताचार्या अर्चना मोहन के शिवरात्रि एवं ऋषि बोध दिवस पर मधुर भजन कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इस शुभ अवसर पर बहन सुश्री कच्चन आर्या की "क्या है आपकी जीवन की सच्चाई" एव विनोद गुप्ता द्वारा रचित पुस्तक का विमोचन स्वामी सुमेधानन्द जी करकमलों द्वारा सम्पन्न किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र.राजसिंह *आर्य ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा – सभी आर्यजनों को समाज और देश के नवनिर्माण में आगे आना चाहिए,तभी ऋषि का उद्देश्य पूरा हो सकता है।* **आर्य जी ने कहा कि, समाज के कल्याण के लिये बने मूलशंकर से दयानन्द।** ऐसे महान ऋषि का हम सब जीवन में प्रेरणा लेकर सत्यपथ पर चलें।

इस अवसर पर रामलीला के इस ऐतिहासिक स्थल पर राजधानी और आस–पास के सैकड़ों की संख्या में आर्यजनों ने ऋषि–बोधोत्सव में सम्मिलित होकर महर्षि के युगान्तरकारी बोध को आदर्श समाज के नवनिर्माण में रूपान्तरित करने का महान संकल्प व्यक्त किया। कार्यक्रम के अवसर पर श्री सुरेश ग्रोवर आर्य वैदिक विद्वान पुरस्कार, श्री लालमन आर्य वैदिक विद्वान पुरस्कार, एवं माता छजियादेवी स्मृति पुरस्कार से आर्य विद्वानों,कार्यकर्त्ताओ को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर सर्वश्री डॉ.बलबीर आर्य (रोहतक) ,आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू के मन्त्री भारतभूषण गुप्ता, चिकोस्लोवालिया से पधारे स्वामी कमलानन्दजी , डॉ.सुन्दर लाल कथुरिया , आचार्य राजसिंह आर्य, धर्मपाल आर्य,डॉ.देव शर्मा वेदालंकार, चन्द्रशेखर शास्त्री, अरुण प्रकाश वर्मा तथा दिल्ली के समस्त आर्यसमाज के आर्य महानुभव उपस्थित थे।

आया होली का त्यौहार

समता समृद्धि व समरसता, का हो धरती पर संचारण।
सभी समस्याओं का हो फिर, अब भारत की शीघ्र निवारण।
जाति वर्ग भेट मिटाकर, करें परस्पर सद्व्यवहार।
आया होली का त्यौहार, आया होली का त्यौहार।

छुआछूत है कोढ़ हमारा, इसको आओ। अभी मिटाएं।
जो पिछडे–दलित कहाते, उन सबको, उन सबको हम गलें लगाएं।
सब जन हों संगठित यहां पर बढे एकता का आधार।
आया होली का त्यौहार, आया होली का त्यौहार।।

बन्धन टूटे जाति–पांति का, एक सूत्र में बंधे समाज।
राष्ट्र भक्ति की जगें भावना, राष्ट्र समर्पित हम हों आज। ।
राम कृष्ण गौतम गांधी के, स्वप्न सुनहरे कों साकार।
आया होली का त्यौहार , आया होली का त्यौहार।

बढ़ें प्रगति पथ कदम हमारे, सौख्य–सद्शयता हो जागृत।
हृदय–हृदय की दूरी कम हो, परहित में हो हम सब रत।
नव जागृत का, नवचेतना का फिर खिले शुचित अभिसार।
आया होली का त्यौहार, आया होली का त्यौहार।।

– मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर (उ.प्र.)

शास्त्रार्थों के रोचक संस्मरण

आर्य समाज का आरम्भ का युग शास्त्रार्थों का युग रहा है। एक समय था जब प्रत्येक आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर शास्त्रार्थ अवश्य होता था। पौराणिक, जैनी, ईसाई, मुसलमान सभी के साथ शास्त्रार्थ होते थे। इन शास्त्रार्थों में कभी–कभी बड़ी मनोरंजन घटनाएँ भी घटित होती थी। हम ऐसे ही कुछ रोचक संस्मरण यहाँ लिख रहे हैं। सर्वप्रथम हम आर्यसमाज के संस्थापक, शास्त्रार्थ केसरी महर्षि दयानन्द के संस्मरण से ही आरम्भ कर रहे हैं आप सभी भक्तिभाव एवं श्रद्धा के साथ पढेंगे ऐसी आशा है – सम्पादक

यह तो शास्त्रार्थ की झलकी हुई। महर्षि के जीवन में वार्तालाप आदि के प्रसंगों पर भी अनेक रोचक कथनांक मिलते हैं। हम तीन चार घटनाएँ यहाँ दे रहे हैं–

बात सम्भवतः लाहौर –(अब पाकिस्तान में) की है। महाराज अपने उपदेशामृत से लोगों को तृप्त कर रहे थे और शंका समाधान के द्वारा लोगों के भ्रम–जाल, मिथ्या विश्वास और अविद्यान्धकार को दूर कर उनके हृदयों को वैदिक ज्ञानज्योति से आपूर कर रहे थे।

एक दिन एक सज्जन उनके पास आकर एक दवात दिखाकर पूछने लगा– "क्या इस दवात में भी ईश्वर है?" स्वामी जी ने कहा– "हाँ है।" फिर पूछा– "क्या पत्थर में भी भगवान् है?" स्वामी जी बोले–"हाँ, उसमें भी है। वह सर्वव्यापक है, अतः संसार के कण–कण में ओत–प्रोत है।" तब वह व्यक्ति बोला–"जब परमात्मा पत्थर में भी है, तब यदि माखनचोर की मूर्ति को पूजें और उसे मत्था टेकें तो क्या हानि हुई? ईश्वर तो उसमें भी है।" स्वामी जी ने कहा–"तुम घड़ियाल में भी ईश्वर को मानते हो या नहीं?"वह बोला– मानता हूँ।" तक स्वामी जी ने कहा–"अरे ! छटाँकभर के माखनचोर के आगे तो मत्था रगड़ते हो, परन्तु पाँच सेर के घड़ियाल को कूटते–पीटते हो। यह कहाँ की बुद्धिमत्ता है?" उस व्यक्ति से कुछ कहते हुए नहीं बना, लज्जा से अपना सिर झुकाया और चला गया।

महर्षि दयानन्द काशी के बाजार में से निकल रहे थे। एक दुकान पर शिवराजविजय के लेखक और काशी –शास्त्रार्थ के सत्ताईस पण्डितों में से एक पण्डित अम्बिकादत्त व्यास ने दुकानदार से पूछा– 'गुडस्य को भावः'–गुड़ का भाव क्या है? महर्षि ने उत्तर दिया– 'गुडत्वम्'–मीठापन। इसका उत्तर को सुनकर पं. अम्बिकादत्त ने पीछे मुड़कर देखा तो दयानन्द मुस्कुरा रहे थे। उन्होंने सोचा शास्त्रार्थ –समर में बाजी मारने वाला यहाँ भी बाजी मार गया। ***क्रमशः.....***

ऋषि बोधोत्सव की कुछ प्रमुख झलकियां

बोधोत्सव के शुभ अवसर पर उपस्थित आर्यजन

उद्‌बोधन करते डॉ. देवशर्मा

बोधोत्सव के अवसर पर पुस्तक का विमोचन करते सभा अधिकारी

श्री ओमप्रकाश नरुला जी का सम्मान करते दिल्ली सभा के प्रधान श्र.राजसिंह जी आर्य

उद्‌बोधन करते पं.प्रणवदेव शास्त्री

"क्या है आपकी जीवन की सच्चाई" इस पुस्तक का विमोचन करते अतिथिगण

आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री जी को सम्मान करते केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी एवं अन्य आर्यजन

उद्‌बोधन करते डा. बलबीर आचार्य जी

श्री हरबंस लाल कोहली जी को सम्मानित करते सभा अधिकारी

बच्चों द्वारा हुआ भाषण प्रतियोगिताएं ,विद्वत गोष्ठी, एवं मधुर भजन भव्य आयोजन

शिवाजी पर लघुनाटिका प्रस्तुत करते बच्चे

ध्वजारोहण करते श्री बलदेव जिन्दल जी एवं अन्य आर्यजन

विद्यालयों के छात्राओं ने उत्साह पूर्वक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लिया

भजन प्रस्तुत करते संगीताचार्य अर्चना मोहन एवं अन्य साथी

अपना ईश्वरीय भजन प्रस्तुत करते बालिका

आर्य वीरांगना दल जनकपुरी की वीरांगनाओं की मनमोहक प्रस्तुति

आर्य विद्या मन्दिर अलवर में महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव उत्साह के साथ सम्पन्न

आर्य कन्या विद्यालय समिति एवं श्री रामलीला आर्य कन्या छात्रावास समिति अलवर जिले के समस्त आर्य समाज अलवर द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती के साथ वैदिक विद्याल मन्दिर, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर में मनाया गया।

आयोजित कवि सम्मेलन में आगन्तुक कवि अतिथियों का वैदिक ने एवं श्री बलबीर सिंह करूण आदि महानुभव का पुष्पमाला पहनाकर स्वागत किया गया। इस शुभ अवसर पर विद्यालयों के बच्चों द्वारा कवि,गीत, नाटय एवं कन्या एन गाँधी, अमरमुनि, वेद प्रकाश शर्मा, प्रमोद आर्य, बी.डी.चौधरी, महताब सिह, च्यवन भार्गव, बृजेन्द्र देव आर्य, कृष्णलाल अदलखॉ, धर्मवीर आर्य, मीता गुप्ता,

कवि सम्मेलन में अपना काव्य प्रस्तुत करती छात्राँ

कवि सम्मेलन में उपस्थित आर्यजन

189 वां जन्मदिवस आज दिनांक गुरुवार 7 मार्च 2013 को श्री जगदीश प्रसार गुप्ता प्रधान आर्य कन्या विद्यालय समिति की अध्यक्षता में अत्यन्त हर्षोल्लास परम्परानुसार विद्यालय छात्रा दीपिका ने तिलक लगाकर तथा प्रदीप कुमार आर्य, अशोक आय, कै.रघुनाथ सिंह, डॉ. राजेन्द्र कुमार आर्य, सुरेशदर्गन एवं प्रद्युम्न गर्ग भ्रूण हत्या पर काव्य पाठ कर उपस्थित श्रोताओं के अन्तकरण को झकझोर दिया।

इस अवसर पर छबील दास पावा, नरेश पावा,जगदीश प्रसाद शर्मा, डॉ.एन. मोहिनी गुप्ता एवं विद्यालय अध्यापकगण, छात्राएँ तथा शहर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

दिल्ली की सभी आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से

आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य)

के तत्त्वावधान में

नव सम्वत्सर 2070 के अवसर पर

140 वाँ आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रमी सम्वत् 2070, तद्नुसार

वीरवार, 11 अप्रैल, 2013

स्थान : फिक्की सभागार, बाराखम्बा रोड,

निकट मंडी हाउस मैट्रो स्टेशन, नई दिल्ली-110001

कार्यक्रम

यज्ञ : .....प्रात: 8.30 से 9.45 बजे

ध्वजारोहण..... : 9.45 से 10 बजे

सार्वजनिक सभा .....: 10.15 से 1 बजे

सम्मान एवं अभिनन्दन : इस अवसर पर 'श्री धीरज घई सुपुत्र श्री वीरेन्द्र कुमार घई स्मृति पुरस्कार' से आर्य कार्यकर्ता को सम्मानित किया जाएगा।

ऋषि मेला की प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पारितोषिक वितरण

शान्ति पाठ एवम् प्रसाद वितरण

हजारों की संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

डॉ. पूर्ण सिंह डबास जी को साहित्यकृति सम्मान

आपने आर्य समाज साकेत का वृहद इतिहास लिखकर आर्य समाज के इतिहास लेखन की कड़ी में महत्वपूर्ण दायित्व का निर्वाह किया है

आर्य समाज साकेत (नई दिल्ली) के प्रधान डॉ. पूर्ण सिंह डबास जी को उनकी हास्य–व्यंग्य रचना दुर्गति मैदान के लिस इन्द्रप्रस्थ साहित्य भारती दिल्ली के द्वारा "जैनेन्द्र कुमार सम्मान" से सम्मानित किया गया। यह साहित्य कृति सम्मान समारोह स्वामी विवेकानंद की 150 वीं जयंती के उपलक्ष्य में गत 3 मार्च 2013 को नई दिल्ली स्थित हिन्दी भवन के सभागार में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के प्रवक्ता सुश्री मीनाश्री लेखी एवं अन्य गण–मान्य व्यक्ति मौजूद थे। डॉ. डबास के परिचय के बाद, सुश्री मीनाक्षी लेखी ने उन्हें शॉल,श्रीफल, प्रशस्ति पत्र एवं प्रतीक चिह्न भेंट करके सम्मानित किया।

यह उल्लेखनीय है कि डॉ. डबास जान–माने व्यंग्यकार हैं और इस क्षेत्र में उनकी : जब जुल्फों पर रिसर्च होगी : कुषी– प्रदान देश', बाप की तलाश में एक आत्मा, नेतांजलि' तथा दुर्गति मैदान, आदि अनेक रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। इन में से कुषी प्रदान देश दिल्ली सरकार की हिन्दी अकादमी द्वारा पुरस्कृत भी की जा चुकी है। डॉ. डबास न केवल एक व्यंगकार हैं बल्कि एक गंभीर भाषाविद भी हैं। भाषा विज्ञान के क्षेत्र में भी उनकी हिन्दी में देशज शब्द तथा हिन्दी का अनुकरणात्मक शब्द कोश आदि कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। उन्होंने अनेक पुस्तकों और स्मारिकाओं का सम्पादन भी किया है तथा धर्म–दर्शन और भाषा विज्ञान संबंधी उनके लेख विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं। उन्होंने आर्य समाज साकेत का इतिहास भी लिखा है। दो सौ पृष्ठ की यह पुस्तक बहुत संदर और प्रेरक है।

डॉ. डबास बीजिंग विश्वविद्यालय (चीन) में विजिटिंग प्रोफेसर रहे हैं तथा उन्होंने विश्व के अनेक देशों की यात्राएँ की हैं। उनकी विदेश यात्राओं के संस्मरणों पर आधारित महाद्वीपों के आर–पार' नामक पुस्तक हाल ही में प्रकाशित हुई हैं। जिसमें उनकी चीन,ऑस्ट्रेलिया,यूरोप (इंग्लैण्ड,फ्रांस,जर्मनी,स्विटजरलैण्ड, हॉलेण्ड, व बेल्जियम), अमरीका तथा स्कैंडेनेवियाई देश नॉर्वे और स्वीडन के संस्मरण संगृहीत हैं।

डॉ. डबास आर्य समाज साकेत के संस्थापक सदस्य हैं। उन्होंने इस समाज की स्थापना से लेकर आज तक अपने चीन प्रवास के दो वर्षो को छोड़कर किसी न किसी पद पर रहते हुए समाज की गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाई है। पिछले 16 वर्ष से तो वे निरंतर इस समाज की सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित होते आ रहे हैं। डॉ. डबास ने आर्य समाज साकेत में कई नई योजनाएँ शुरू की जिनमें छात्रवृत्ति योजनाह(सन 1998), योग साधना एवं वैदिक संस्कार शिविर, नव चेतना शिविर, तथा वैदिक साहित्य का प्रकाशन, मुख्य है। छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत इस समय 200 रुपये प्रति मास की दर से 40 छात्रवृत्तियाँ दी जा रही हैं। योग साधना शिविरों के अंर्तगत दिल्ली के 40 विद्यार्थियों को गर्मी की छुट्टियों में उत्तराखण्ड या हिमाचल के किसी रमनीक स्थान पर लेजाया जाता है। वहाँ पर उन्हें गुरुकुल की दिनचर्या के अनुरूप रखा जाता है और एक निश्चित पाठयक्रम के अनुसार वैदिक चिंतन से अवगत कराया जाता है। नवचेतना शिविरों में उड़ीसा के आदिवासी क्षेत्रों में कार्य कर रहे गुरुकुल की छात्राओं को नवम्बर के महीने में दिल्ली आमंत्रित कर के उन्हें राजधानी के सभी दर्शनीय स्थल दिखाए जाते हैं। सन् 2011 में आए छात्राओं के दल को तो राष्ट्रपति भवन भी दिखाया गया और तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभादेवी सिंह पाटिल से भेंट कराई गई।

यहाँ यह भी स्मरणीय है कि आर्य समाज साकेत द्वारा संचालित ऐलोपैथिक औषाधालय को विभिन्न विशेषज्ञों सहित 20 डॉक्टर अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। इस धर्मार्थ औषाधालय में औसतन 80 रोगी प्रतिदिन उपचार के लिए जाते हैं।

डॉ. डबास अनेक सामाजिक, शैक्षिक तथा आर्य संस्थाओं से जुड़े हैं। वे गुरुकुल आश्रम आमसेना (जि. नवापारा, उड़ीसा) के संस्थापक है और आर्ष ज्योति गुरुकुल कोसरंगी (जि.महासमुंद, छतीसगढ़) के कुल पिता हैं। वे पर्यावरण के क्षेत्र में महत्पूर्ण कार्य कर रही संस्था अरावली फाण्डेशन फोर एज्यूकेशन' के संस्थापक एवं अध्यक्ष हैं।

– विनय आर्य,

आर्य सन्देश पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

फार्म 4 नियम 8

(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक एक्ट)

प्रकाशक का नाम	:	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली – 110001
प्रकाशक की अवधि	:	साप्ताहिक
प्रकाशक का समय	:	प्रति बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार
प्रकाशक का नाम	:	ब्र.राजसिंह आर्य
क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
मुद्रक का पता	:	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15– हनुमान रोड,नई दिल्ली– 110001
क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
प्रकाशक का पता	:	पूर्ववत्
सम्पादक का नाम	:	ब्र.राजसिंह आर्य
क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
सम्पादक का पता	:	पूर्ववत्

उन व्यक्तियों के नाम पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार/हिस्सेदार हों :

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली –110001

मैं ब्र.राजसिंह आर्य इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त विवरण जहां तक मेरा ज्ञान और विश्वास है, सही है ।

– ब्र.राजसिंह आर्य, प्रकाशक एवं मुद्रक

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

विद्यालय–विभाग (हरिद्वार) उत्तराखण्ड –249404

प्रवेश प्रारम्भ

प्रवेश तिथि: रविवार, 07 अप्रैल 2013

आधुनिक सुविधाओं सहित आवासीय विद्यालय

(10+2) गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय–विभाग हरिद्वार में

- सभी आधुनिक विषयों के साथ-साथ छात्रों के सर्वांगीण विकास की शिक्षण संस्था।
- विज्ञान वर्ग में पी.सी.एम.एवं पी.सी.बी. एवं वाणिज्य वर्ग तथा कला वर्ग
- हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

श्री जयप्रकाश विद्यालंकार (सहायक मुख्याधिष्ठाता)

9927016872,9412025930,9690679382, 9927084378

www.gurukulkangrividyalaya.org

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph. :011-43781191, 09650622778

E-mail : aspt.india@gmail.com

आगामी कार्यक्रम

आर्य समाज कीर्ति नगर नई दिल्ली में ऋषिबोधोत्सव एवं 57 वें वार्षिकोत्सव

तिथिः वीरवार, 21 मार्च से रविवार 31 मार्च, 2013 तक
यज्ञ एवं आशीर्वाद : प्रातः 8.30 से 10.15
भजन व संगीत : प्रातः 10.30 से 11.00 बजे तक (श्री अंकित शास्त्री द्वारा)
निवेदक : आर्य समाज कीर्ति नगर , नई दिल्ली -110015

आर्य समाज सुन्दर विहार, का 28 वें वार्षिक अधिवेशन

तिथि : शुक्रवार, 29 मार्च से रविवार 31 मार्च, 2013 तक
यज्ञ : प्रातः 6.00 से 6.45 (ब्रह्मा डॉ. लक्ष्मण कुमार शास्त्री जी)
भजन : सायं 7.00 से 8.00 बजे तक (कु.सवर्चा, आर्य भजन गायिका)
प्रवचन : सायं 8.00 से 9.00 बजे तक (आचार्य राजू वैज्ञानिक युवा, वैदिक प्रवक्ता)
निवेदक : आर्य समाज सुन्दर विहार , नई दिल्ली

श्रीमद्दयानन्द आर्ष गुरुकुल खेंड़ा खुर्द , दिल्ली में 68 वें वार्षिकोत्सव पर सामवेद पारायण यज्ञ एवं दिव्य सत्संग

तिथिः रविवार, 7 अप्रैल 2013
सामवेद पारायण यज्ञ : 4 अप्रैल से 6 अप्रैल 2013 तक
समय : प्रातः 7 से 9 बजे तक एवं सायं5.30 से 7.00 बजे तक
प्रवचन : प्रातः 10.15 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक
निवेदक : श्रीमद् दयानन्द आर्ष गुरुकुल खेड़ाखुर्द, दिल्ली

आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह के अवसर पर

वैदिक प्रकाशन की ओर से

प्रकाशित वैदिक साहित्य पर भारी छूट

यह छूट केवल होली मंगल मिलन समारोह स्थल पर लगे सभा के पुस्तक स्टॉल पर ही उपलब्ध रहेगी।

अनु.	साहित्य	मूल्य	समारोह मूल्य
1.	सत्यार्थ प्रकाश 18 भाषाओं में (सीडी)	30/-	20/-,
2.	महर्षि दयानन्द के सम्पूर्ण ग्रन्थ (सीडी)	30/-	20/-
3.	शेख चिल्ली और लाल भुझक्कड (सीडी)	30/-	20/-
4.	पारिवारिक सुखशान्ति एवं समृद्धि के लिये यज्ञ करे (सीडी)	30/-	20/-
5.	गुरुदेव दयानन्द (सीडी)	30/-	20/-
6.	सत्य की राह (सीडी)	30/-	20/-
7.	अन्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की 5 सी.डी का सेट	150/-	50/-
8.	वैदिक विनय	150/-	110/-
9.	गुरुदत्त विद्यार्थी – हिन्दी / अंग्रेजी	80/-	60/-
10.	दयानन्द लघुग्रंथ सग्रंह	70/-	50/-
11.	उपनिषदों की कहानियाँ	60/-	40/-
12.	शगुन लिफाफा सिक्केवाला	400 /- सैकडा	300/-
13.	शगुन लिफाफा बिना सिक्केवाला	300 /-	200/-
13.	नैतिक शिक्षा व्यवहार कुशलता	200/-	100/-
14.	नेम स्लीप	10/-	8/-
15.	समस्त कॉमिक्स	25 से 35/-	20/-
16.	अनुपम दिनचर्या एवं गीतांजलि	50/-	35/-
17.	वेद भाष्य (घूड़मल प्रकाशन)	5000/-	3000/-
19.	सत्यार्थ प्रकाश (अजिल्द)	40/-	25/-
	सत्यार्थ प्रकाश (सजिल्द)	80/-	60/-
	सत्यार्थ प्रकाश (स्थूलाक्षर)	150/-	125/-

अन्य प्रकाशनों के साहित्य पर विशेष 10% की छूट।

नेट पर पढ़े-पढ़ाएँ और डाउनलोड करें : वेद, योग तथा अन्य वैदिक साहित्य

वेद, योग, पादानुक्रमकोश (संस्कृत में पहली बार) अन्य वैदिक साहित्य को देख एवं डाइनलोड करने के लिए **www.ved-yog.com** पर जाएँ। सम्पूर्ण आर्ष साहित्य इस बेवसाइट पर देने का प्रयास जारी है। और अधिक जानकारी के लिए श्री सतीश आर्य की चलभाष संख्या 9810815845 से सम्पर्क किया जा सकता है।

कार्यक्रम सम्पन्न

4 दिवसीय वेदप्रचार समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज, बी–ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली में वीरवार, 21 फरवरी 2013 से रविवार 24 फरवरी, 2013 तक चार दिवसीय वेदप्रचार समारोह हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

21 फरवरी को आयोजित महिला सम्मेलन की मुख्य वक्ता डॉ निष्ठा विद्यालंकार थीं। शेष तीनों दिन प्रातः सायं प्रख्यात वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के प्रेरक प्रवचन हुए। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता आचार्य चन्द्रशेखर जी थे।

इस अवसर पर टंकारा ट्रस्ट के मंत्री श्री रामनाथ सहगल जी का माल्यार्पण, शाल, प्रतीक चिह्न आदि से भव्य सम्मान करते हुए उन्हें आर्यमार्तण्ड के सम्मान से भी विभूषित किया गया। मनन आश्रम पिंडवाड़ा के संस्थापक डॉ. स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती जी को अध्यात्म पथ पत्रिका की ओर से आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री एवं डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया ने माल्यार्पण, प्रतीक चिह्न एवं शाल ओढ़ाकर अध्यात्ममार्तण्ड सम्मान से विभूषित किया।

समापन समारोह में श्री कृष्ण बवेजा जी की पुस्तक वेदज्ञान एक संक्षिप्त परिचय डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया के ग्रन्थ 'शून्य से शिखर तक स्वामी श्रद्धानन्द एवं आध्यात्म पथ' के विशेषांक का लोकार्पण मंच पर आसीन संन्यासीगण, आर्यनेताओं एवं विद्वानों ने किया।

अपने सुमधुर भजनों से साध्वी उत्तमा यति जी एवं पं. सहदेव सरस ने सबका मनमोह लिया। यज्ञ के ब्रह्मा, आचार्य योगेन्द्रशास्त्री एवं उनके सहयोगी पं. जगमाल जी थे।

कार्यक्रम में क्षेत्र के आर्यजनों एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थिति थे।

– योगेश्वरचन्द्रार्य, प्रचार मंत्री

दिल्ली के नगर-नगर में हुआ ऋषि जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज सागरपुर, नई दिल्ली

महर्षि दयानन्द सरस्वती का 189 वां जन्मोत्सव 7 मार्च 2013 व बोधोत्सव 10 मार्च 2013 को आर्य समाज मन्दिर सागरपुर के प्रांगण में अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस शुभ अवसर पर आचार्य सागर कुमार शास्त्री भजन एवं आचार्य रामनिवास गुणग्राहक के प्रवचन हुये।

कार्यक्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य सहित क्षेत्र अन्य आर्यजन भी उपस्थित थे।

आर्य समाज नारायणा विहार, नई दिल्ली

आर्यसमाज नारायणा विहार दिल्ली में महर्षि दयाननद के जन्मोत्सव व बोधोत्सव के अवसर पर वीरवार, 7 मार्च से शनिवार, 9 मार्च को प्रातः 5.30 से 7.30बजे तक इस कालोनी के विभिन्न 9 ब्लॉक में प्रभात फेरी निकाली। प्रभात फेरी में लगभग 100 से 150 गणमान्य व्यक्तियों, महिलाओं, बच्चों ने भाग लिया ।

इस शुभ अवसर पर प्रतिदिन प्रातः एवं सायं यज्ञ आचार्य श्यामदेव के ब्रह्मत्व में भजन संध्या श्रीमती सुकृति भटनागर के भजनोपदेशक सम्पन्न हुआ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मदिवस पर ऋषि लंगर एवं वैदिक साहित्य वितरण का भी आयोजन हुआ।

इस अवसर वैदिक विद्वान व आर्य नेता डॉ. महेश विद्यालंकार के उद्बोधन हुये। कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या में आर्यजन एवं अन्य गण मान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

– रणवीर सिंह, प्रधान

शोक समाचार

हैदराबाद आन्दोलन के प्रणेता स्वन्त्रता सैनानी महाशय रामशरण आर्य जी का निधन

स्वन्त्रता सैनानी महाशय रामशरण आर्य जी का गुरुवार, 21 फरवरी 2013 को 102 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आर्य जी का अन्तिमसंस्कार करनाल में पूर्ण वैदिक पद्धति एवं हरियाणा पुलिस द्वारा राष्ट्रीय सम्मान से सम्पन्न हुआ।

रामशरण जी का आर्यसमाज एवं महर्षि दयानन्द के प्रति पूर्ण समर्पित भाव से सामाजिक कार्यो में योगदान देते रहे। वे दानवीर, कर्मठ,समाजसेवी थे।

आर्य जी अपने पीछे भराभूरा परिवार छोड गये। उनके पुत्र सत्यप्रकाश आर्य जी आर्यसमाज विशाख इन्कलेव पीतमपुरा दिल्ली के प्रधान पद पर सुशोभित हैं। और उनके पौत्र डॉ. जयदीप आर्य भारत स्वाभिमान एवं पतंजलि योगपीठ में समर्पित भाव से कार्य करते हुए अपने स्व.दादा जी का अनुसरण कर रहे हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

18 मार्च, 2013 से 24 मार्च, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 21 / 22 मार्च –2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 20 मार्च, 2013

नव सम्वत्सर कार्ड

होली के शुभअवसर पर विशेष छूट

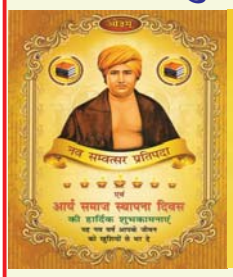

विशेष छूट पर उपलब्ध

~~700/-~~

मात्र 500/– रुपये प्रति सैकड़ा

अपनी आर्यसमाज के नाम से कार्ड छपा लें।

यह विशेष छूट केवल होली मंगल मिलन समारोह पर ही रहेगा।

प्रतिष्ठा में,

श्री.....

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2012 के कूपनों पर एकत्र की गई राशि शीघ्र भेजें

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के विशाल कार्य पर बहुत अधिक व्यय हुआ है। सभी दान दाताओं एवं दान एकत्र करने वालों से निवेदन है कि वे अपनी राशि तथा कूपनों पर एकत्र की गई राशियाँ कूपन सहित शीघ्रताशीघ्र सभा कार्यालय में भेजें। जो सज्जन महासम्मेलन में अपनी आहुति अभी तक न दे पाए हों उनसे भी निवेदन है कि वे भी अपनी आहुति अवश्य ही भेजें, ताकि महासम्मेलन के कार्यों के बिल भुगतानों में किसी भी प्रकार की असुविधा न हो।

– ब्र0 राजसिंह आर्य, संयोजक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के तत्वावधान में

पांचवा आर्य परिवार योग्य युवक–युवती परिचय सम्मेलन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) द्वारा आरम्भ किए गए आर्य परिवार विवाह संयोग सेवा के 5वें आर्य परिचय सम्मेलन के लिए पंजीकरण आरम्भ हो गए हैं। यह सम्मेलन जुलाई 2013 के प्रथम सप्ताह में आयोजित किया जाएगा। अतः जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/ पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, यथाशीघ्र करा लें। पंजीकरण की अन्तिम तिथि 30 जून 2013 निश्चित की गई है। इसके बाद प्राप्त होने वाले आवेदन परिचय विवरणिका में प्रकाशित नहीं हो सकेंगे। पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से सभी कार्य दिवसों में दोपहर 12 से रात्रि 7.30 बजे तक एवं होली मंगल मिलन समारोह के अवसर पर सभा के स्टाल पर से भी प्राप्त किया जा सकता। अथवा स्वपता लिखित लिफाफे पर 5 /– रुपये का टिकट लगा भेजकर प्राप्त किया जा सकता है। पूर्ण विवरण के साथ पासपोर्ट साईज फोटो तथा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम 200 रुपये (दो सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1' के पते पर भेज दें। इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी के लिए इस योजना के संयोजक श्री गोविन्द लाल जी (मोबा. 9811623552) एवं श्री कंवरभान खेत्रपाल जी (9990083831) से सम्पर्क कर सकते हैं।

– विनय आर्य, महामन्त्री

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; टैलीफैक्स 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर